No. of Printed Pages : 4

बी.एच.डी.ई.-101 / ई.एच.डी.-1

0145

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
सत्रांत परीक्षा
जून, 2018

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी
बी.एच.डी.ई.-101 / ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है ।*

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं ***तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) "कुछ नहीं, मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-संपत्ति समझकर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता । यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते तो मुझे बेच भी नहीं सकते । हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिए मैं स्वयं यहाँ से चली जाऊँगी ।"

(ख) उस दिन से निर्मला का रंग-ढंग बदलने लगा । उसने अपने को कर्त्तव्य पर मिटा देने का निश्चय कर लिया । अब तक नैराश्य के सन्ताप में उसने कर्त्तव्य पर ध्यान ही न दिया था । उसके हृदय में विप्लव की ज्वाला-सी दहकती रहती थी, जिसकी असह्य वेदना ने उसे संज्ञाहीन-सा कर रखा था । अब उस वेदना का वेग शान्त होने लगा । उसे ज्ञात हुआ कि मेरे लिए जीवन का कोई आनन्द नहीं । उसका स्वप्न देखकर क्यों इस जीवन को नष्ट करूँ । संसार में सब-के-सब प्राणी सुख-सेज ही पर तो नहीं सोते ? मैं भी उन्हीं अभागों में हूँ । मुझे भी विधाता ने दु:ख की गठरी ढोने के लिए चुना है । वह बोझ सिर से उतर नहीं सकता । उसे फेंकना भी चाहूँ, तो नहीं फेंक सकती । उस कठिन भार से चाहे आँखों में अँधेरा छा जाये, चाहे गर्दन टूटने लगे, चाहे पैर उठाना दुस्तर हो जाये; लेकिन वह गठरी ढोनी ही पड़ेगी ।

(ग) जैबू की आवाज़ से देविन्दर लाल का लगाव था । घर की युवती लड़की की आवाज़ थी, इस स्वाभाविक आकर्षण से ही नहीं, वह विनीत थी; इसलिए । मन-ही-मन वे जैबुन्निसा के बारे में अपने ऊहापोह को रोमानी खिलवाड़ कहकर अपने को थोड़ा झिड़क भी लेते थे, पर अक्सर वे यह भी सोचते थे कि क्या यह आवाज़ भी लोगों में फ़िरक़ापरस्ती का ज़हर भरती होगी ?

(घ) जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ । मैंने बी.ए. पास किया है । कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, और न आपके पुत्र की तरह ताक-झाँक कर कायरता दिखाई है । मुझे अपनी इज़्ज़त-अपने मान का ख्याल तो है । लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह नौकरानी के पैरों पड़कर अपना मुँह छिपाकर भागे थे ।

(ङ) मैं हैरान होकर सोचता हूँ कि मनुष्य आज अपने बच्चों को नाख़ून काटने के लिए डाँटता है । किसी दिन – कुछ थोड़े लाख वर्ष पूर्व – वह अपने बच्चों को नाख़ून नष्ट करने पर डाँटता रहा होगा । लेकिन प्रकृति है कि वह अब भी नाख़ून को जिलाये जा रही है और मनुष्य है कि वह अब भी उसे काटे जा रहा है । वे कंबख़्त रोज़ बढ़ते हैं, क्योंकि वे अंधे हैं, नहीं जानते कि मनुष्य को इससे कोटि-कोटि गुना शक्तिशाली अस्त्र मिल चुका है । मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाख़ून को नहीं चाहता । उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाय, यह उसे असह्य है । लेकिन यह भी कैसे कहूँ, नाख़ून काटने से क्या होता है ? मनुष्य की बर्बरता घटी कहाँ है, वह तो बढ़ती जा रही है । मनुष्य के इतिहास में हिरोशिमा का हत्याकांड बार-बार थोड़े ही हुआ है । यह तो उसका नवीनतम रूप है । मैं मनुष्य के नाख़ून की ओर देखता हूँ तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ । ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं । मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती ।

2. द्विवेदीयुगीन हिन्दी गद्य के विकास पर प्रकाश डालिए । *16*

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए । *16*

4. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला का चरित्र-चित्रण कीजिए । *16*

5. एकांकी के रूप में 'कौमुदी महोत्सव' की विशेषताएँ बताइए । *16*

6. "नारी जागरण की चेतना 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का प्रतिपाद्य है" – इस कथन की समीक्षा कीजिए । *16*

7. 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' निबन्ध के भाव और विचार पक्ष की चर्चा कीजिए । *16*

8. नाटक के प्रमुख तत्त्वों का परिचय दीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

   (क) 'रात बीतने तक' का शिल्प

   (ख) 'निर्मला' उपन्यास का उद्देश्य

   (ग) निबंध

   (घ) 'वापसी' के गजाधर बाबू